ठहराया था।

Sem-2 CC-8

बीसवीं सदी के प्रमुख कृषक आन्दोलन

मालाबार का मोपला विद्रोह

केरल में रहने वाले मोपला कृषक उन अरब लोगों के वंशज थे, जो बहुत पहले ही मालाबार तट पर बस गए। ये मोपला कृषक मुसलमान थे। इनमें अधिकतर गरीब थे। ये या तो खेती करते थे या छोटा-मोटा व्यवसाय।

यहाँ के जमींदार वर्ग 'नम्बूदरी' उच्च वर्ण के हिन्दू थे। चूँकि जमींदारों को पुलिस कानून और कर अधिकारियों का समर्थन प्राप्त था। अतएव उन्होंने मोपला कृषकों पर अपना नियंत्रण बढ़ा लिया था। 1836 ई० से 1854 ई० के बीच मालाबार क्षेत्र में 22 बार विद्रोहों की जानकारी प्राप्त होती है। 1882 ई० से 1885 ई० एवं 1896 ई० में यहाँ पुनः विद्रोह हुए। विद्रोहियों ने हिन्दू मन्दिर नष्ट किए तथा जमींदारों की सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाया। वस्तुतः यह **अमीर एवं गरीब के मध्य** का संघर्ष था, जिसे औपनिवेशिक शासकों ने साम्प्रदायिक रूप दे दिया, क्योंकि जमींदार हिन्दू और कृषक मुसलमान थे।

1921 ई० में मोपला विद्रोह पुनः भड़क उठा। यह पहले से भिन्न था। 1921 ई० में असहयोग आन्दोलन के दौरान गाँधीजी, मौलाना आजाद और शौकत अली ने मोपला आन्दोलन का समर्थन किया। धीरे-धीरे खिलाफत आन्दोलन एवं कृषक बैठकों में अन्तर नहीं रह गया। बढ़ते हुए कृषक प्रभावों से सरकार ने निषेधाज्ञा लागू कर खिलाफत आन्दोलन से सम्बन्धित बैठकों पर प्रतिबन्ध लगा दिया और प्रमुख खिलाफत नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। खिलाफत नेता **अली मुसलियार** जो इस विद्रोह का नेतृत्व कर रहे थे, को गिरफ्तार करने के लिए एक स्थानीय मजिस्ट्रेट ने मस्जिद पर छापा मारा। मुसलियार तो गिरफ्तार नहीं हो पाए किन्तु मस्जिद पर छापा मारे जाने की खबर चारों तरफ फैल गई। बहुत से मोपला एकत्र हो गए तब पुलिस ने गोलियाँ चला दीं, जिससे बड़ी संख्या में मोपला मारे गए। इन सबके परिणामस्वरूप मोपला भी हिंसा पर उतर आए। उन्होंने सरकारी सम्पत्ति लूटी और आग लगा दी। अब ब्रिटिश नौकरशाहों ने हिन्दुओं को भड़काया जिससे इस संघर्ष ने साम्प्रदायिक रूप धारण कर लिया। **दिसम्बर, 1921 ई०** में यह विद्रोह पूरी तरह से कुचल दिया गया।

Scanned with CamScanner

संयुक्त प्रान्त का किसान आन्दोलन

आगरा एवं अवध क्षेत्र के जमींदारों तथा उपनिवेशवादी व्यवस्था ने किसानों का अत्यधिक शोषण किया। 1920 ई० में जमींदारों ने किसानों से मनमाना लगान वसूल किया जबकि फसल नष्ट हो जाने से किसान बहुत हताश थे। अवध में होमरूल लीग के कार्यकर्ता काफी सक्रिय थे। इन्होंने किसानों को संगठित करना शुरू किया और एक संगठन बनाया जिसका नाम 'किसान सभा' रखा गया।

गौरी शंकर मिश्र, इन्द्र नारायण द्विवेदी और **मदन मोहन मालवीय** के प्रयासों से फरवरी, **1918 ई०** में 'उत्तर प्रदेश किसान सभा' का गठन हुआ। जून, 1919 ई० तक इसकी 450 शाखायें स्थापित हो गई थीं।

1919 ई० के अन्तिम दिनों में किसानों का संगठित विद्रोह खुलकर सामने आया। प्रतापगढ़ जिले की एक जागीर में 'नाई-धोबी बन्द' सामाजिक बहिष्कार संगठित कार्रवाई की पहली घटना थी। अवध की तालुकेदारी में ग्राम पंचायतों के नेतृत्व में किसान बैठकों का सिलसिला शुरू हो गया। **झिंगुरी सिंह और दुर्गपाल सिंह** ने इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, लेकिन जल्दी ही एक नए चेहरे **बाबा रामचन्द्र** ने किसान आन्दोलन की नींव सम्भाली।

बाबा रामचन्द्र किसान आन्दोलन में एक प्रमुख हस्ती के रूप में जाने जाते हैं। ये मूलतः महाराष्ट्र के थे। इन्होंने जमींदारों के विरुद्ध अवध के किसानों को संगठित करने के लिए पहल की। ये संन्यासी के वेश में किसानों के बीच रहकर गाँवों में सभायें आयोजित करने लगे। **रामचरितमानस** के पाठ द्वारा किसानों को जागृत एवं संगठित किया। इन्हीं के प्रयास से अक्टूबर, **1920 ई० में प्रतापगढ़ में एक समानान्तर संगठन 'अवध किसान सभा'** का गठन हुआ, जिसने पूरे अवध प्रान्त की लगभग उन सभी किसान सभाओं को अपने में मिला लिया जो अवध में गठित हुई थीं। प्रतापगढ़ के डिप्टी कमिश्नर मेहता ने किसानों को उनकी शिकायतें सुनने और उन्हें दूर करने का आश्वासन दिया। प्रतापगढ़ जिले का **रूर गाँव** किसान सभा की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र बन गया। 1920 ई० में किसान आन्दोलन, असहयोग आन्दोलन से जुड़ गया। 6 जनवरी, 1921 ई० को **फुरशतगंज बाजार** में किसानों ने जमींदारों की निरंकुशता, बनियों के भारी मुनाफे, अनाज और कपड़े की मूल्यवृद्धि के विरोध में आन्दोलन किया।

पुलिस ने इन पर गोली चलाई जिसमें कई लोग हताहत हो गए। इस तरह आन्दोलन कमजोर हो गया। इसी बीच सरकार ने 'अवध मालगुजारी रेन्ट अधिनियम' पारित कर दिया। हालाँकि इससे किसानों को कोई खास राहत तो नहीं मिली लेकिन इस कानून ने किसानों के आन्दोलन को तोड़ने का काम किया।

एका आन्दोलन

1921-22 ई० में अवध के किसानों ने एक आन्दोलन चलाया। यह आन्दोलन **हरदोई, बहराइच, सुल्तानपुर, बाराबंकी और सीतापुर** क्षेत्र में केन्द्रित था। एका आन्दोलन के प्रमुख नेता **मदारी पासी** और **सहरेब** थे। ये दोनों किसान थे और निम्न जाति के थे। वस्तुतः यह आन्दोलन पासी एवं यादवों द्वारा चलाया गया था। इस आन्दोलन के नेताओं ने घोषणा की कि "किसान उन खेतों को न छोड़ें जो गैर कानूनी रूप से उनसे छीने गए

Scanned with CamScanner

हों। वे केवल सुनिश्चित लगान दें तथा उसकी रशीद माँगें। इस आन्दोलन का कारण **अत्यधिक लगान** और गैर कानूनी रूप से **खेत छीनना** था। पुलिस ने जमींदारों के हितों की रक्षा के लिए इस आन्दोलन का कठोरतापर्वूक दमन किया। एका आन्दोलन पहले के 'किसान सभा आन्दोलन' से इस मायने में अलग था कि जहाँ किसान आन्दोलन में मूलतः काश्तकार सम्मिलित थे, जमींदार नहीं, वहीं एका आन्दोलन में छोटे-मोटे जमींदार भी शामिल थे जो बढ़े हुए लगान के बोझ से परेशान एवं सरकार से नाराज थे।

बारदोली सत्याग्रह (1928 ई०)

गुजरात के सूरत जिले में स्थित बारदोली 1922 ई० के बाद राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया था। देश में एक तरफ साइमन कमीशन का विरोध किया जा रहा था। उन्हीं दिनों बारदोली के किसानों ने **लगान वृद्धि** के विरुद्ध संघर्ष प्रारम्भ किया। 1926-27 ई० में कपास के मूल्यों में गिरावट के बावजूद सरकार ने बारदोली में राजस्व 22% बढ़ा दिया। बाध्य होकर किसान अपनी भूमि बेचने के लिए तैयार थे, किन्तु मन्दी की वजह से कोई खरीददार नहीं था। किसानों की ओर से कांग्रेस नेताओं ने सरदार **बल्लभ भाई पटेल** से आन्दोलन का नेतृत्व करने का अनुरोध किया। 4 फरवरी, 1928 ई० को बल्लभ भाई पटेल बारदोली पहुँचे। इनके नेतृत्व में बारदोली के किसानों ने लगान की अदायगी तब तक न करने का निर्णय किया जब तक कि सरकार किसी **निष्पक्ष न्यायाधिकरण** का गठन नहीं करती या पहले से दिए जा रहे लगान को ही पूरी अदायगी नहीं मानती। **सरकार** ने पूरे तालुके को **13 शिविरों** में विभाजित कर प्रत्येक में एक अनुभवी **नेता तैनात किया।** इस तरह सत्याग्रह की शुरुआत हुई। अगस्त, 1928 ई० में गाँधीजी बारदोली पहुँचे और उन्होंने घोषणा की कि यदि सरकार ने सरदार पटेल को गिरफ्तार किया तो वे किसानों का नेतृत्व करेंगे।

बारदोली सत्याग्रह में **महिलाओं ने** सक्रिय रूप से भाग लिया। इन महिलाओं में कस्तूरबा गाँधी, मनी बेन पटेल (बल्लभ भाई पटेल की पुत्री), शारदा बेन शाह, गीठू बेन, भक्तिबा (दरबार गोपाल दास की पत्नी) और शारदा मेहता ने व्यापक रूप से जन सम्पर्क किया। बारदोली की औरतों ने ही पटेल को **सरदार** की उपाधि से विभूषित किया। अन्त में सरकार ने एक राजस्व अधिकारी मैक्सवेल से इस मामले में जाँच करवाई। इसने लगान वृद्धि को अनुचित बताया। अतः, लगान वृद्धि 22% से घटाकर 6.03% कर दी गई। इस प्रकार यह अहिंसात्मक कृषक आन्दोलन सफल हुआ।

बिजौलिया आन्दोलन

यह **राजस्थान के बिजौलिया** क्षेत्र में चला था। **मेवाड़** के **बिजौलिया** के जागीरदार किसानों से 84 प्रकार की लगान वसूल करते थे। इसके अतिरिक्त किसानों को अपनी लड़की के विवाह पर 5 रुपये इन्हें देने पड़ते थे। 1913 ई० में सारे बिजौलिया क्षेत्र के किसानों ने लगान नहीं अदा किया और न ही भूमि पर खेती की। इस आन्दोलन के प्रारम्भिक नेता **चारण** और **ब्रह्मदेव** थे। इन्हें बिजौलिया से निर्वासित कर दिया गया था। बाद में बेगार से मना करने पर इनके नेता **नारायण बटले** को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। अब यहाँ पर सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया। यह सत्याग्रह भूप सिंह ने चलाया। भूप सिंह को रास बिहारी बोस और शचीन्द्र नाथ सान्याल ने राजस्थान में क्रान्तिकारी कार्यों के

Scanned with CamScanner

लिए भेजा था। भूप सिंह को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया लेकिन जेल से भाग करके विजय सिंह पथिक के नाम से ये बिजौलिया गए और वहाँ का आन्दोलन तेज किया। वहाँ के राजा पर दबाव बढ़ा और एक जाँच आयोग की नियुक्ति की गई। 1922 ई० में भारत सरकार का एक प्रतिनिधि "हालैण्ड" बिजौलिया पहुँचा। हालैण्ड की मध्यस्थता से किसानों के साथ समझौता हुआ। अब इसमें से 35 करों को हटा दिया गया। बाद में माणिक्य लाल वर्मा ने जमना लाल बजाज से मुलाकात कर उन्हें आन्दोलन का नेता बना दिया। बजाज के प्रतिनिधि उपाध्याय ने मेवाड़ के बन्दोबस्त अधिकारी ट्रेंच से समझौता किया। फिर भी किसानों को पुरानी जमीनें वापस नहीं मिलीं। अन्ततः 1941 ई० में काफी संघर्ष के बाद किसानों को उनकी जमीनें वापस मिल गईं।

बकाश्त किसान संघर्ष (1946-47 ई०)

बिहार का बकाश्त किसान संघर्ष बहुत उग्र था। बिहार में तीन प्रकार की भूमि का वर्णन मिलता है।

(1) **बकाश्त भूमि**—जिसे जमींदार अस्थायी काश्तकारों को विभिन्न दरों पर प्रतिवर्ष किराये पर देते थे।

(2) **रैय्यत भूमि**—यह स्थायी काश्तकारों की भूमि थी।

(3) **जिरती भूमि**—यह जमींदारों की स्वयं की भूमि थी जिस पर खेतिहर मजदूर काम करते थे।

बकाश्त किसानों के पास कोई वैधानिक अधिकार नहीं थे। जमींदारों को बेदखली में रुचि इसलिए होती थी कि उन्हें नए असामी से अधिक किराया मिलता था। 1946 ई० के मई-जून में मुंगेर, गया, शाहाबाद, दरभंगा, मुजफ्फरपुर, भागलपुर एवं मधुबनी में जमींदारों एवं बकाश्तकारों में जमकर संघर्ष हुआ। यह संघर्ष तब तक चलता रहा जब तक कि कांग्रेस सरकार ने बाध्य होकर 'बिहार जमींदारी उन्मूलन अधिनियम, 1948' पारित नहीं कर दिया।

तेभागा आन्दोलन (1946-50 ई०)

यह आन्दोलन **मुख्यतः बंगाल में** केन्द्रित था। **इसकी शुरुआत त्रिपुरा के हसनाबाद से हुई**। यहाँ से यह बंगाल में नोआखोली तक फैल गया। इस आन्दोलन के प्रमुख नेता **कम्पाराम सिंह** एवं **भवन सिंह** थे।

नोआखोली इस समय भीषण साम्प्रदायिक दंगों में झुलस रहा था। परन्तु, इस आन्दोलन में हिन्दू एवं मुस्लिम किसानों ने एकता का प्रदर्शन किया। इसमें बटाईदार किसानों ने ऐलान किया कि वे फसल का 2/3 हिस्सा लेंगे और जमींदारों को सिर्फ 1/3 हिस्सा ही देंगे। बँटवारे की इसी अनुपात के कारण इसे तेभागा आन्दोलन कहते हैं।

तेलंगाना का किसान आन्दोलन (1946-51 ई०)

तेलंगाना उस समय निजाम द्वारा शासित हैदराबाद रियासत का एक अंग था। यहाँ के किसानों का आन्दोलन दूसरे विश्व युद्ध के बाद शुरू हुआ, जब उनसे कम दाम पर जबर्दस्ती अनाज वसूला जा रहा था।

तेलंगाना के किसानों के विद्रोह का तात्कालिक कारण ...

Scanned with CamScanner

थी। ये कम्युनिष्ट नेता थे और स्थानीय किसानों के संगठनकर्ता थे। किसानों ने पुलिस और जमींदारों पर हमला किया। 1946-47 ई० में किसानों का यह विद्रोह अपनी चरम सीमा पर थां। किसानों ने यह माँग की कि हैदराबाद रियासत को समाप्त किया जाए तथा उसे भारत का अंग बना दिया जाए।

तेलंगाना कृषक आन्दोलन भारतीय इतिहास के सबसे लम्बे छापामार कृषक युद्ध का साक्षी बना। स्वतंत्रता के बाद यह आन्दोलन समाप्त हो गया।

वर्ली आन्दोलन (1945 ई०)

पश्चिमी भारत में बम्बई नगर से थोड़ी दूर पर रहने वाले आदिम जाति के वर्ली लोग जंगल के ठेकेदारों, साहूकारों, धनी कृषकों तथा भू-पतियों के विरुद्ध उठ खड़े हुए। किसान सभा की सहायता से मई, 1945 ई० में उन्होंने आन्दोलन आरम्भ कर दिया। बाद में ये लोग साम्यवादी दल के प्रभाव में आ गए।

पुन्नप्रा एवं वायलार का संघर्ष

ये दोनों स्थान केरल में अलप्पी जिले में स्थित थे। यहाँ का संघर्ष किसानों एवं मजदूरों का मिला-जुला संघर्ष था। यह सामन्ती उत्पीड़न और शोषण के विरुद्ध था। इसका प्रारम्भ अक्टूबर, **1946 ई०** में हुआ। इसमें हिस्सा लेने वाले काश्तकार खेत-मजदूर और नारियल की जटा के रस्सियों के कारखानों के मजदूर थे। यहाँ पर सामन्त इनके साथ गुलामों जैसा व्यवहार करते थे।

इस आन्दोलन का दमन पाशविक तरीकों से किया गया। इनमें शिविरों को घेरकर गोलियां चलाई गईं, जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए। सारे मामले को दबा दिया गया। इस तरह यह आन्दोलन कुचल दिया गया।

अखिल भारतीय किसान संगठन

1927 ई० में 'बिहार किसान सभा' का गठन हुआ। इसके गठन का श्रेय **स्वामी सहजानन्द सरस्वती** को जाता है। **1928 ई०** में **"आंध्र-प्रान्तीय किसान सभा"** का गठन **एन० जी० रंगा** ने किया। अप्रैल, 1935 ई० में संयुक्त प्रान्त में किसान संघ की स्थापना हुई। इसी वर्ष प्रो० एन० जी० रंगा एवं अन्य किसान नेताओं ने सभी प्रान्तीय किसान सभाओं को मिलाकर एक अखिल भारतीय किसान संगठन बनाने की तैयारी के लिए मद्रास में एक सम्मेलन आयोजित किया और यहीं संगठन बनाने का निर्णय लिया गया।

1936 ई० में अखिल भारतीय किसान संगठन बना जिसे 'अखिल भारतीय किसान सभा' नाम दिया गया। **पहला अखिल भारतीय किसान सम्मेलन 11 अप्रैल, 1936 ई० में लखनऊ में हुआ। स्वामी सहजानन्द सरस्वती इसके अध्यक्ष एवं प्रो० एन० जी० रंगा महासचिव** चुने गए। इस सम्मेलन में जवाहर लाल नेहरू ने भी भाग लिया और भाषण दिया। इस अधिवेशन में 1 सितम्बर, 1936 ई० को किसान दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। भारत के इतिहास में पहली बार किसानों ने देश भर में 1936 ई० के मई दिवस में भाग लिया।

किसान आन्दोलन को गति प्रदान करने के लिए सक्रिय कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित

Scanned with CamScanner

किया जाना आवश्यक था। अत:, **1938 ई०** में आंध्र प्रदेश के गुण्टूर जिले में निदुब्रोल में पहला **भारतीय किसान स्कूल** खोला गया। 1942 ई० तक किसान आन्दोलन और राष्ट्रीय आन्दोलन साथ-साथ चलते रहे और इसका उद्देश्य भारत की स्वाधीनता प्राप्ति था। 1942 ई० के बाद किसान संघ राष्ट्रीय आन्दोलन के रास्ते से काफी दूर हो गया। तब उसका न केवल जनाधार कमजोर हुआ बल्कि उसके नेतृत्व में भी फूट पड़ने लगी।

Scanned with CamScanner